❍ 24 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *अच्छे मैनर्स सीखे और सीखलाये ?*

➢➢ *हर कदम पर सुप्रीम सर्जन से राय ल ?*

➢➢ *त्रिकालदर्शी स्थिति में रह ड्रामा के हर समय के पार्ट को देखा ?*

➢➢ *सदा योगयुक्त रह सर्व का सहयोग प्राप्त किया ?*

————————————————————

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

〰✧ *शरीर में होते निराकारी आत्मिक रुप में स्थित रहो तो यह साकार रूप गायब हो जायेगा।* जैसे साकार बाप को देखा, व्यक्त गायब हो अव्यक्त दिखाई देता था। *तो ऐसी अवस्था बनाने के लिए मन्सा में निराकारी स्टेज, वाचा में निरहंकारी और कर्म में निर्विकारी स्टेज हो। संकल्प में भी कोई विकार का अंश न हो।*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

✺ *"मैं खुशी के खजाने से सम्पन्न आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा खुशी के खजानों से खेलने वाले हो ना? *खुशी भी एक खजाना है जिस खजाने द्वारा अनेक आत्माओंको माला माल बना सकते हो। आजकल विशेष इसी खजाने की आवश्यकता है।* और सब हैं लेकिन खुशी नहीं। आप सबको तो खुशियों की खान मिल गयी है। अनगिनत खजाना मिल गया है।

〰✧ खुशी के खजाने में भी वैराइटी है ना। कभी किस बात की खुशी कभी किस बात की खुशी। कभी बालक पन की खुशी तो मालिकपन की खुशी। *कितने प्रकार के खुशी के खजाने मिले हैं। वो वर्णन करते हुए औरों को भी मालामाल बना सकते हो। तो इन खजानों को सदा कायम रखो। और सदा खजानों के मालिक बनो।*

〰✧ सदा बाप द्वारा मिली हुई शक्तियों को कार्य में लगाते रहो। बाप ने तो शक्तियाँ दे दी हैं। अब सिर्फ उन्हें कार्य में लगाओ। *सिर्फ मिल गया है, इसमें खुश नहीं रहो लेकिन जो मिला है वो स्वयं के प्रति और सर्व के प्रति यूज करो तो सदा मालामाल अनुभव करेंगे।*

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ चाहे प्रकृति के पाँचों ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे परंतु *विदेही अवस्था की अभ्यासी आत्मा बिल्कुल ऐसा अचल-अडोल पास विद ऑनर होगा जो सब बातें पास हो जायेंगी लेकिन वह ब्रह्मा बाप के समान पास विद ऑनर का सबूत रहेगा।*

〰✧ बापदादा समय प्रति समय इशारे देते भी हैं और देते रहेंगे। *आप सोचते भी हो, प्लैन बनाते भी हो, बनाओ।* भले सोचो लेकिन क्या होगा! उस आश्चर्यवत होकर नहीं। विदेही, साक्षी बन सोची लेकिन सोचा, प्लैन बनाया और सेकण्ड में प्लेन स्थिति बनाते चलो।

〰✧ अभी आवश्यकता स्थिति की है। *यह विदेही स्थिति परिस्थिति को बहुत सहज पार कर लेगी।* जैसे बादल आये, चले गये। और विदेही, अचल-अडोल हो खेल देख रहे हैं। अभी लास्ट समय को सोचते हो लेकिन लास्ट स्थिति को सोची।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *फ़रिश्ते अर्थात् भक्तों को और वैज्ञानिकों को टचिंग कराने वाले* (दीदी से) वर्तमान समय महावीरों की वतन में विशेष महफिल लगती है। क्यों लगती है, वह जानती हो? आजकल बापदादा ने जैसे स्थापना में ब्रह्मा के सम्पूर्ण स्वरूप द्वारा साक्षात्कार कराने की सेवा ली, ऐसे *आजकल अष्ट रत्न सो इष्ट रत्न उनको भी शक्ति के रूप में साथ-साथ साक्षात्कार कराने की सेवा कराते हैं।* स्थूल शरीर द्वारा साकारी ईश्वरीय सेवा में बिजी रहते हो लेकिन आजकल अनन्य श्रेष्ठ आत्माओं की डबल सेवा चल रही है। जैसे ब्रह्मा द्वारा स्थापना की वृद्धि हुई वैसे अभी शिव-शक्ति के कम्बाइन्ड स्वरूप द्वारा साक्षात्कार और सन्देश मिलने का कार्य आपके सूक्ष्म शरीरों द्वारा भी हो रहा है। तो बापदादा अनन्य बच्चों को इस सेवा में भी सहयोगी बनाते हैं। इसलिए सूक्ष्म सेवा के प्रैक्टिकल प्लैन के कारण वहाँ महफिल लगती है। इसलिए *महावीर बच्चों को कर्म करते भी किसी भी कर्मबन्धन से मुक्त सदा डबल लाइट रूप में रहना है।* बाप ने सूक्ष्म वतन में इमर्ज किया, सेवा कराई- उसकी अनुभूति इस साकार सृष्टि से भी कर सकते हो। ऐसे अनुभव आगे चल कर बहुत करेंगे। डबल सेवा का पार्ट चल रहा है। *बापदादा अनन्य बच्चों के संगठन द्वारा भक्तों को और वैज्ञानिकों को, दोनों को टचिंग कराने की सेवा कराते रहते हैं।* उनमें अनन्य भक्ति के संस्कार भर रहे हैं जो आधा कल्प भक्ति मार्ग को चलाते रहेंगे। और वैज्ञानिकों को परिवर्तन करने और रिफ़ाइन साधन बनाने में। जो साधन जैसे ह सम्पन्न होंगे तो उसका सुख सम्पूर्ण आत्मायें लेंगी। ये (वैज्ञानिक) नहीं ले सकेंगे। तो दोनों ही कार्य सूक्ष्म सेव द्वारा हो रहे हैं। समझा?

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- अब वापिस घर जाना की स्मृति में रहना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा पार्क में बैठी देख रही खेल-खेलकर थककर वापिस लौट रहे बच्चों को... अपनी सुध-बुध खोकर खेल में मग्न बच्चों को माता-पिता घर वापिस ले जा रहे... गायें अपने बछडो को साथ लेकर घर लौट रही... चहचहाते पंछी शाम होने का संदेशा सुना रहे... पश्चिम में सूरज की लालिमा ऐसे लग रही जैसे सूरज भी घर वापस जाते अलविदा कह रहा हो... शीतल मंद हवा के झोकें के साथ मंद मंद मुस्कुराते हुए मेरे सामने मेरा बाबा खड़ा है... *मेरे पिता भी मुझे अपने साथ घर ले जाने आया है...*

❉ *मेरे प्यारे बाबा जन्मों से भूले बिछड़े घर की स्मृति दिलाते हुए कहते हैं:-* “मेरे मीठे फूल बच्चे... अब दुःख के दिन पूरे होने को आये है... अब दुःख की कालिमा से निकल मीठे महकते सुखो में मुस्कराने के दिन आ गए है... *सदा इसी नशे में खोये रहो कि अब पिता संग घर चलना है... और फिर नई सी खूबसूरत दुनिया में आना है...”*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा अब घर जाना है की स्मृति से ख़ुशी में नाचते हुए कहती हूँ:-* “हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा दारुण दुखो से मुक्त हो गई हूँ... और कर्मातीत अवस्था को पाती जा रही हूँ... *हर पल हर साँस में यही दोहरा रही हूँ कि अब आप संग घर वापिस चलना है...* जाना है और मीठे सखो में पनः वापिस आना है...”

❇ *मेरे मीठे बाबा अपना आकाश सिंहासन छोड़ नूर बनकर इस धरती पर उतरकर कहते है:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... दुखो के कंटीले जंगल से मुक्त कराने को प्यारा बाबा धरा पर उतर आया है... आप बच्चों के मीठे सुखो के लिए परमधाम छोड़ कर धरती पर बसेरा कर लिया है... *तो हर साँस को घर चलने की याद में पिरो दो... बाबा का हाथ पकड़ संगसंग घर चलने की तैयारी कर लो..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बाबा के दिए खजानों से साज श्रृंगार करते हुए कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा न्यारी और प्यारी बनकर घर की ओर रुख ले रही हूँ... मीठे बाबा आपका हाथ पकड़कर घर चलने को सज संवर गई हूँ... *यह खेल अब पूरा हुआ... और नया खुबसूरत खेल फिर शुरू होने वाला है मै आत्मा यह सोच सोच अथाह खुशियो में झूम रही हूँ..."*

❇ *मेरे बाबा जन्मों से बिछुड़ी अपनी बच्ची को घर ले जाने के लिए आतुर होते हुए कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... हर बात से उपराम होकर शान्तिधाम पिता संग उड़ने की तैयारी में जीजान से जुट जाओ... *अपने सच्चे स्वरूप को याद कर उसकी मीठी याद में खो जाओ...* खुबसूरत आसमानी मणि इस धरा पर खेलने मात्र आई थी... और अब वापिस अपने घर को जाना है..."

➳ _ ➳ *मेरा प्यारा बाबा अब मुझे घर ले जाने आया है, सदा इसी रूहाब में रहते हुए मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा अपने सत्य स्वरूप के नशे में खो रही हूँ... मै शरीर नही प्यारी सी चमकती आत्मा हूँ... *स्वयं को और सच्चे चमकते पिता को जानकर घर की ओर रुख ले रही हूँ... अब घर को जाना है यह यादो में गहरे समाया है..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- हर कदम पर सुप्रीम सर्जन से राय लेनी है*"

➳ _ ➳ कर्मयोगी बन हर कर्म करते, कदम - कदम पर सुप्रीम सर्जन *अपने शिव पिता परमात्मा से राय लेते, उनकी श्रीमत पर चल अपने दैनिक कर्तव्यों को पूरा करके, एकांत में अपने सुप्रीम सर्जन शिव बाबा की याद में मैं मन बुद्धि को स्थिर करके बैठ जाती हूँ* और विचार करती हूँ कि 5 विकारों रूपी ग्रहण ने कैसे मुझ आत्मा को बिल्कुल ही रोगी बना दिया था! मेरे सुंदर सलौने सोने के समान दमकते स्वरूप को इन विकारों की बीमारी ने आयरन के समान बिल्कुल ही काला कर दिया था।

➳ _ ➳ शुक्रिया मेरे सुप्रीम सर्जन शिव पिता परमात्मा का जो ज्ञान और योग की दवाई से मुझ बीमार आत्मा का उपचार कर मुझे फिर से स्वस्थ बना रहें हैं। *मुझ आत्मा के ऊपर चढ़ी हुई विकारों की कट को उतार, ज्ञान अमृत और योग अग्नि से हर रोज मुझे प्युरीफाई करके रीयल गोल्ड के समान फिर से चमकदार बना रहें हैं*। अपने सुप्रीम सर्जन शिव बाबा को याद करते - करते अब मैं अपने मन बुद्धि को अपने सुंदर सलौने ज्योति बिंदु स्वरूप पर एकाग्र करती हूँ जो हर रोज ज्ञान और योग की खुराक खाकर सोने के समान उज्जवल बनता जा रहा है।

➳ _ ➳ देख रही हूँ मन बुद्धि के नेत्रो से अब मैं अपने सत्य ज्योतिर्मय स्वरूप को। *अपनी स्वर्णिम किरणे बिखेरता एक चमकता हुआ सितारा भृकुटि के मध्य में जगमगाता हुआ मुझे स्पष्ट दिखाई दे रहा है*। मेरा यह दिव्य ज्योतिर्मय स्वरूप मुझे असीम आनन्द की अनुभूति करवा रहा है। अपने इस सम्पूर्ण निर्विकारी स्वरूप में मैं आत्मा स्वयं को सातों गुणों और सर्वशक्तियों से सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ। *अपने इस सतोप्रधान स्वरूप में स्थित हो कर अब मैं अपना सम्पूर्ण ध्यान परमधाम में विराजमान अपने शिव पिता पर केंद्रित करती हूँ*।

➳ _ ➳ अशरीरी बन उनकी याद में बैठते ही मन उनसे मिलने के लिए बेचैन हो उठता है और मैं आत्मा उनसे मिलने के लिए जैसे ही उनका आह्वान करती हूँ मैं स्पष्ट अनभव करती हूँ कि *मेरे सप्रीम सर्जन मेरे शिव पिता

परमात्मा एक ज्योतिपुंज के रूप में अपनी सर्वशक्तियों रूपी अनन्त किरणों को चारों और फैलाते हुए परमधाम से नीचे उतर कर मेरे सामने उपस्थित हो गए हैं और आ कर अपनी सर्वशक्तियों की किरणों रूपी बाहों में मुझे भर लिया है*। अपने शिव पिता परमात्मा की किरणों रूपी बाहों में समा कर इस नश्वर देह और देह की दुनिया को अब मैं बिल्कुल भूल गई हूँ। केवल मेरे सुप्रीम सर्जन शिव बाबा और मुझ पर निरन्तर बरसता हुआ उनका असीम प्यार मुझे दिखाई दे रहा है।

➳ _ ➳ अपनी बाहों के झूले में झुलाते हुए मेरे मीठे शिव बाबा अब मुझे अपने साथ इस छी - छी विकारी दुनिया से दूर, अपने निर्विकारी धाम की ओर ले कर जा रहे हैं। *एक चमकती हुई ज्योति में आत्मा स्वयं को महाज्योति अपने शिव पिता की किरणों रूपी बाहों में समाये, साकारी दुनिया से दूर ऊपर की ओर जाते हुए मन बुद्धि रूपी नेत्रों से स्पष्ट देख रही हूँ*। पांच तत्वों की इस दुनिया के पार, सूक्ष्म लोक से भी पार अपने शिव पिता के साथ मैं पहुंच गई निर्वाणधाम अपने असली घर। शिव पिता के साथ कम्बाइंड हो कर अब मैं स्वयं को उनकी सर्वशक्तियों से भरपूर कर रही हूँ ।

➳ _ ➳ मेरे सुप्रीम सर्जन शिव बाबा से आ रही सर्वशक्तियों का स्वरूप ज्वालामुखी बन कर मुझ आत्मा द्वारा किये हुए 63 जन्मो के विकर्मों को दग्ध कर रहा है। *विकारों की कट उतर रही है और मैं आत्मा सच्चा सोना बनती जा रही हूँ*। मुझ आत्मा की चमक करोड़ो गुणा बढ़ती जा रही है। स्वयं को मैं बहुत ही हल्का अनुभव कर रही हूं।

➳ _ ➳ अपने शिव पिता की लाइट माइट से स्वयं को भरपूर करके डबल लाइट बन अब मैं वापिस साकारी दुनिया मे अपने साकारी तन में आ कर विराजमान हो गई हूँ। *फिर से अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर हर कदम पर अपने सुप्रीम सर्जन शिव बाबा से राय ले कर अब मैं सम्पूर्ण निर्विकारी बनने का पुरुषार्थ निरन्तर कर रही हूँ*। मेरे सुप्रीम सर्जन शिव बाबा से कदम - कदम पर मिलने वाली राय मेरे हर संकल्प, बोल और कर्म को श्रेष्ठ बना कर मुझे श्रेष्ठता का अनुभव करवा रही है।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं त्रिकालदर्शी स्थिति में रह ड्रामा के हर समय के पार्ट को देखने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर नॉलेजफुल आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा योगयुक्त हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सर्व का सहयोग स्वतः प्राप्त करती हूँ ।*
✺ *मैं निरंतर योगी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ ➳ बापदादा ने देखा है कि एक संस्कार या नेचर कहो, नेचर तो हर

एक की अपनी-अपनी है लेकिन *सर्व का स्नेही और सर्व बातों में, सम्बन्ध में सफल, मन्सा में विजयी और वाणी में मधुरता तब आ सकती है जब इजी नेचर हो।* अलबेली नेचर नहीं। अलबेलापन अलग चीज है। इजी नेचर उसको कहा जाता है - *जैसा समय, जैसा व्यक्ति, जैसा सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इजी कर देवे। इजी अर्थात् मिलनसार।* टाइट नेचर बहुत टू-मच आफीशियल नहीं, आफीशियल रहना अच्छा है लेकिन टू-मच नहीं और समय पर जब समय ऐसा है, उस समय अगर कोई आफीशियल बन जाता है तो वह गुण के बजाए, उनकी विशेषता उस समय नहीं लगती। अपने को मोल्ड कर सके, मिलनसार हो सके, छोटा हो, बड़ा हो। बड़े से बड़ेपन में चल सके, छोटे से छोटेपन में चल सके। साथियों में साथी बनके चल सके, बड़ों से रिगार्ड से चल सके। इजी मोल्ड कर सके, शरीर भी इजी रखते हैं ना तो जहाँ भी चाहें मुड जाते हैं और टाइट होगा तो मुड नहीं सकेगा। अलबेला भी नहीं, इजी है तो जहाँ चाहे इजी हो जाए, अलबेला हो जाए। नहीं। *बापदादा ने कहा ना इजी हो जाओ तो इजी हो गये, ऐसे नहीं करना। इजी नेचर अर्थात् जैसा समय वैसा अपना स्वरूप बना सके।*

✺ *ड्रिल :- "इजी नेचर से जैसा समय, जैसा व्यक्ति, जैसा सरकमस्टांश वैसा अपना स्वरूप बनाना"*

➳ _ ➳ *कोटो में कोई और कोई में भी कोई मैं पदमापदम सौभाग्यशाली आत्मा... ब्रह्मामुख वंशावली ब्राह्मण आत्मा बन गई...* शुक्रिया अदा करती मैं संगमयुगी आत्मा... बैठी हूँ बाबा के कमरे में... बापदादा का भावपूर्ण आह्वान करती मैं आत्मा ज्योतिपुंज... अपने शरीर के अकालतख्त पर विराजमान हूँ... *देह अभिमान से मुक्त मुझ आत्मा का प्यार भरा आह्वान सुनकर बापदादा आ जाते हैं मेरे समीप...* बाबा का कमरा दिव्य अलौकिक खुशबू से भर जाता हैं... बापदादा का फ़रिश्ता स्वरुप गोल्डन तेजोमय किरणों से प्रकाशित हो रहा हैं...

➳ _ ➳ *बापदादा से आती हुई रंग बिरंगी चमकीली किरणों का फाउंटेन पूरे कमरे में फ़ैल गया हैं...* मैं आत्मा परिपूर्ण होती जा रही हूँ... मुझ आत्मा का स्थूल शरीर भी पवित्र होता जा रहा हैं... मैं आत्मा अपने स्थूल शरीर का त्याग कर फ़रिश्ता स्वरुप धारण करती हूँ... और मैं आत्मा अपने फ़रिश्ते स्वरुप में

चल पड़ती हूँ बापदादा के साथ... एक ग्लोब की चोटी पर... *बापदादा के संग मैं आत्मा बैठी हूँ ग्लोब की चोटी पर...* बापदादा एक सीन दिखा रहे हैं... एक बड़ा हॉल हैं जहाँ एक फंक्शन चल रहा हैं... बच्चे... जवान... वृद्ध... सभी खुश खुशहाल नजर आ रहे हैं...

➳ _ ➳ खाना-पीना... ऐश-आराम की कोई कमी नहीं थी... भरपूरता ही भरपूरता थी... *बस कमी थी तो संस्कारों की... न बड़ो का लिहाज रखा जा रहा था और न बच्चों और छोटो से प्यार भरा आचरण था... युवा पीढ़ी अपने ही दैहिक आकर्षणों में उलझी हुई थी...* चारो तरफ वातावरण अस्त-व्यस्त दुराचार से भरा हुआ था... तभी वहाँ पर एक ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी के एक ग्रुप का आगमन होता हैं... *वाइट ड्रेस में... श्री लक्ष्मी श्री नारायण का बैच पहने... हाथों में बापदादा का झंडा लहराए...* द्वार पे खड़े थे... प्रोग्राम के आयोजक से परमिशन लेकर ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों ने शिव प्रदर्शनी का आयोजन किया...

➳ _ ➳ और पूरे हॉल में डीप साइलेंस छा जाता हैं... जब ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी का प्रवचन स्टार्ट होता हैं... *भगवान कौन... हम कौन... सारे सृष्टि चक्र का राज... संगमयुग में भगवान के अवतरण को जानकर* सभी उपस्थित अचम्भित हो जाते हैं... न कभी सुना ऐसा गुह्य ज्ञान... सुन कर भाव विभोर हो जाते हैं... *ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी का मिलनसार व्यक्तित्व... संयमपूर्वक वार्तालाप... नजरों में... वाणी में... एक एक बोल में... प्यार भरी मिठास* देख के... सुन के... सभी उपस्थित लोगों का दिल ख़ुशी के हिलोरे ले रहा हैं... और मैं फ़रिश्ता आत्मा यह नजारा देख मन ही मन बाबा को धन्यवाद कहती हूँ... बापदादा से प्रवाहित होता किरणों का झरना उन सभी उपस्थित और ब्रह्माकुमार - ब्रह्माकुमारियों पर प्रवाहित हो रहा हैं और सभी के व्यक्तित्व में निखार आ रहा हैं... *सभी को अपनी भूलों का अहसास होता है... और सभी का व्यवहार मिलनसार... खुशनुमा बनता जा रहा हैं...*

➳ _ ➳ *बाबा के पवित्र... रूहानी किरणों से सभी आत्माओं की ज्योति जग जाती हैं... और सभी बाबा के बच्चे बन जाते हैं...* ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विदयालय में राजयोग मेडिटेशन का कोर्स कर बापदादा की श्रीमत पर परा परा

बलिहार जाते हैं... सभी उपस्थित आत्मायें... *सर्व का स्नेही और सर्व बातों में, सम्बन्ध में सफल, मन्सा में विजयी और वाणी में मधुरता लाने में सक्षम हो जाते हैं... इजी नेचर - जैसा समय, जैसा व्यक्ति, जैसा सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इजी कर देना ही अब हम सभी ब्राह्मण आत्माओं का ईश्वरीय कर्तव्य बन गया हैं...* बाबा से आशीर्वाद लेती मैं आत्मा वापिस अपने स्थूल देह में प्रवेश करती हूँ और अपने लौकिक कार्य में इजी नेचर अर्थात् जैसा समय वैसा अपना स्वरूप अनुभव कर रही हूँ।

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔